विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

भारत प्लास्टिक प्रदूषण में सबसे आगे

कचरा पूरी दुनिया के लिए एक वैश्विक समस्या है। भारत की बात करें तो आज घर-घर में प्लास्टिक ने अपना कब्जा जमा लिया है। एक ताज़ा शोध रिपोर्ट में दावा किया गया है कि दुनिया भर में भारत में सबसे अधिक प्लास्टिक कचरा निकलता है। ब्रिटेन के लीड्स विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं के मुताबिक दुनिया हर साल 5.7 करोड़ टन प्लास्टिक प्रदूषण पैदा करती है। शोध के मुताबिक भारत दुनिया में प्लास्टिक कचरे का सबसे अधिक उत्पादन करता है। यहां एक साल में 1.02 करोड़ टन प्लास्टिक कचरा पैदा होता है, जो दूसरे सबसे बड़े प्लास्टिक कचरा उत्पादक के मुकाबले दो गुना से भी अधिक है। शोधकर्ताओं ने अध्ययन के लिए दुनिया भर के 50 हजार से अधिक शहरों और कस्बों में स्थानीय स्तर पर उत्पादित कचरे की जांच की है। इस अध्ययन के दौरान ऐसे प्लास्टिक की जांच की गई जो खुले वातावरण में जाता है। दुनिया की 15 प्रतिशत आबादी से सरकार प्लास्टिक कचरा इकट्ठा करने और निपटाने में विफल रहती है, वहीं इस 15 फीसदी आबादी में भारत के 25.5 करोड़ लोग शामिल हैं। प्लास्टिक कचरे का पर्यावरण पर गंभीर दुष्प्रभाव पड़ता है। अध्ययन के अनुसार हर साल दुनिया में लगभग 251 मिलियन टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न होता है।

प्लास्टिक कचरे का सही प्रबंधन नहीं होने से यह पर्यावरण में प्रदूषण का कारण बनता है। दुनिया में कचरा प्लास्टिक का 10 प्रतिशत हिस्सा ही रिसाइकल किया जाता है। प्लास्टिक से निर्मित उत्पादों के अपशिष्ट को प्लास्टिक प्रदुषण कहते हैं। प्लास्टिक प्रदुषण मुख्यत: प्लास्टिक के कचरे से पैदा होता है। प्लास्टिक सिंथेटिक या अर्ध-सिंथेटिक सामग्रियों की एक विस्तृत श्रृंखला होती है जो मुख्य घटक के रूप में पॉलिमर का उपयोग करते हैं। प्लास्टिक एक नॉन-बायोडिग्रेडेबल पदार्थ है जिसका अपघटन बहुत लम्बे समय तक नहीं होता है, जिसके कारण वातावरण दूषित होता है। प्लास्टिक को सड़ने में 400 साल या उससे भी ज्यादा समय लगता है।

कचरा में प्लास्टिक सबसे खतरनाक माना जाता है। प्लास्टिक कचरा से हर देश परेशान है। सरकार के लाख प्रतिबंदों के बावजूद हमारा फ्री प्लास्टिक का सपना पूरा नहीं हो रहा है और इसका एक मात्र कारण इसका सस्ता, टिकाऊ और हल्का होना है। पॉलीथिन के उपयोग पर प्रतिबंध के बाद भी इसका असर दिखाई नहीं दे रहा है। हर जगह पॉलीथिन का उपयोग हो रहा है। किराना सामान खरीदना हो या फिर सब्जी, फल हों या अन्य सामग्री, हर जगह अमानक स्तर की पॉलीथिन उपयोग की जा रही है। पर्यावरण को सबसे अधिक नुकसान प्लास्टिक कचरा से पहुंचता है। एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक प्लास्टिक बैग का इस्तेमाल औसतन 25 मिनट तक होता है। प्लास्टिक की थैलियों को नष्ट होने में एक शताब्दी से 500 वर्ष तक का समय लगता है। दुनिया भर में हर मिनट दस लाख प्लास्टिक बैग का इस्तेमाल होता है। अस्सी प्रतिशत समुद्री कूड़ा-कचरा प्लास्टिक है। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार, हर साल लाखों टन प्लास्टिक का उत्पादन होता है जो हमारे पर्यावरण को प्रभावित करता है। पैकेजिंग क्षेत्र दुनिया में एकल उपयोग प्लास्टिक कचरे का सबसे बड़ा उत्पादक है। उत्पादित प्लास्टिक का लगभग 36 प्रतिशत पैकेजिंग में उपयोग किया जाता है, जिनमें से 85 प्रतिशत लैंडफिल या कुप्रबंधित कचरे के रूप में समाप्त हो जाते हैं। औद्योगिक क्षेत्र से 100 मिलियन पाउंड का प्लास्टिक समुद्र में प्रवेश करता है। कपड़ों में बनी 60 प्रतिशत सामग्री प्लास्टिक है। अकेले कपड़े धोने से हर साल लगभग 500000 टन प्लास्टिक माइक्रोफाइबर समुद्र में छोड़े जाते हैं। इससे पता चलता है कि हमें अपने पर्यावरण को प्लास्टिक प्रदूषण से बचाने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने आगामी एक जुलाई से प्लास्टिक के बने तमाम उपयोगी सामान जैसे पॉलिथीन, गिलास, कांटे-चम्मच, कप, प्लेट समेत तमाम चीजों के उपयोग पर बैन करने का निर्णय किया है। पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले प्लास्टिक के झंडों से लेकर ईयरबड तक पर एक जुलाई से पाबंदी होगी।

प्लास्टिक सिंथेटिक या अर्ध-सिंथेटिक सामग्रियों की एक विस्तृत श्रृंखला होती है जो मुख्य घटक के रूप में पॉलिमर का उपयोग करते हैं। प्लास्टिक एक नॉन-बायोडिग्रेडेबल पदार्थ है जिसका अपघटन बहुत लम्बे समय तक नहीं होता है, जिसके कारण वातावरण दूषित होता है।

वर्तमान में बंदिश के बावजूद हर जगह उपलब्ध होने वाली पॉलीथिन पूरे जीव-जगत पर संकट खड़ा कर रही है। फिर भी लोग इसके उपयोग से गुरेज नहीं कर रहे हैं। यह पर्यावरण के साथ पूरे पारिस्थितिकी तंत्र के लिए घातक है। गली-कूचों से लेकर हर ओर पॉलीथिन फेंके पड़े रहते हैं। पीने के पानी से लेकर खाने की प्लेट तक प्लास्टिक हमारी जिंदगी का अभिन्न हिस्सा बन गया है। प्लास्टिक सस्ता और आसानी से उपलब्ध होने वाला विकल्प है। इसलिए हमारी रोजमर्रा की चीजें या तो प्लास्टिक से बनी होती हैं या उनके निर्माण में प्लास्टिक की भूमिका होती है। केन्द्रीय पर्यावरण नियन्त्रण बोर्ड के एक अध्ययन के मुताबिक एक व्यक्ति एक साल में 6 से 7 किलो प्लास्टिक कचरा बिखेरता है। इस प्लास्टिक कचरे से नालियां बंद हो जाती है, धरती की उर्वरा शक्ति खत्म हो जाती है, भूगर्भ का जल अपेय बन जाता है, रंगीन से कैंसर जैसे असाध्य रोग हो जाते हैं। आज वैश्विक स्तर पर प्रतिव्यक्ति प्लास्टिक का उपयोग जहां 18 किलोग्राम है वहीं इसका रिसायक्लिंग मात्र 15.2 प्रतिशत ही है। प्लास्टिक प्रदूषण मानव जीवन के समक्ष एक बड़े खतरे के रूप में उभरा है।

वर्तमान में प्लास्टिक प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन गया है। दुनिया भर में अरबों प्लास्टिक के बैग हर साल फेंके जाते हैं। ये प्लास्टिक बैग नालियों के प्रवाह को रोकते हैं और आगे बढ़ते हुए वे नदियों और महासागरों तक पहुंचते हैं। चूंकि प्लास्टिक स्वाभाविक रूप से विघटित नहीं होता है इसलिए यह प्रतिकूल तरीके से नदियों, महासागरों आदि के जीवन और पर्यावरण को प्रभावित करता है। प्लास्टिक प्रदूषण के कारण लाखों पशु और पक्षी मारे जाते हैं जो पर्यावरण संतुलन के मामले में एक अत्यंत चिंताजनक पहलू है। आज हर जगह प्लास्टिक दिखता है जो पर्यावरण को दूषित कर रहा है। जहां कहीं प्लास्टिक पाए जाते हैं वहां पृथ्वी की उपजाऊ शक्ति कम हो जाती है और जमीन के नीचे दबे दाने वाले बीज अंकुरित नहीं होते हैं तो भूमि बंजर हो जाती है। प्लास्टिक नालियों को रोकता है और पॉलीथीन का ढेर वातावरण को प्रदूषित करता है। चूंकि हम बचे खाद्य पदार्थों को पॉलीथीन में लपेट कर फेंकते हैं तो पशु उन्हें ऐसे ही खा लेते हैं जिससे जानवरों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है यहां तक कि उनकी मौत का कारण भी।

–अतिथि संपादक,
बालमुकुंद ओझा,
वरिष्ठ लेखक और पत्रकार

भारत-अमेरिका संयुक्त युद्धाभ्यास 2024 अपने अंतिम पड़ाव पर

दो चरणों में काल्पनिक युद्ध हुआ, दोनों सेनाओं ने युद्धाभ्यास में दुश्मन का खात्मा किया

बीकानेर/जैसलमेर, (निसं)। भारत-अमेरिका संयुक्त युद्धाभ्यास-2024 अपने अंतिम पड़ाव पर है। महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में गुरुवार से 72 घंटों का युद्ध शुरू हुआ था, जिसका शुक्रवार को दूसरा दिन है। शुक्रवार को दो चरणों में काल्पनिक युद्ध हुआ। पहले चरण में फील्ड में अलग-अलग टारगेट बनाए गए। जवानों ने दूर से ही अपना टारगेट सेट कर करीब 25 किमी दूर से निशाना साधा। एयरफोर्स के अपाचे, एलसीएच और थल सेना के हेलिकॉप्टर रुद्र से दुश्मनों पर हमला किया गया। दूसरे चरण में आतंकियों के ठिकानों को खत्म किया गया।

अमेरिकी सेना की हाई मोबिलिटी आर्टिलरी रॉकेट सिस्टम को तैनात किया गया। इस सिस्टम से लंबी दूरी तक सटीक हमला किया। काल्पनिक युद्ध के दौरान भारतीय और अमेरिकी सैनिकों ने लाइव-फायर ड्रिल्स और संयुक्त वायु अभियानों का भी प्रदर्शन किया। खास बात है कि अमेरिका के 600 जवानों में भारतीय मूल की कैप्टन दुर्रानी भी हैं। वह भारतीय जवानों से हिंदी में ही बात करती हैं। उन्नत लाइट हेलिकॉप्टर (एएलएच) और अपाचे एएच-64 हेलिकॉप्टरों के सहयोग से जवान एक से दूसरे स्थान पर पहुंचे। इन हेलिकॉप्टर के संचालन की ट्रेनिंग भी दोनों देशों के जवानों ने ली थी। इस दौरान पिनाका एमबीआरएल सहित कई हथियारों का उपयोग हो रहा है। काल्पनिक युद्ध में टारगेट को फिक्स कर पिनाका से करीब 25 किलोमीटर दूर चिड़ासर से हमले किया गया। आज इसे महज 25 किलोमीटर तक रखा गया। युद्ध के दौरान जब तक इन्फेंट्री यानी पैदल जवान टारगेट तक नहीं आए, तब तक फायरिंग चलती रही। आधा किलोमीटर की दूरी तय करने तक दो गाड़ियों से भारतीय और अमेरिकी जवान फायरिंग करते रहे।

भारत और अमेरिकी सैनिकों ने जटिल सामरिक युद्धाभ्यास, लाइव-फायर ड्रिल्स और संयुक्त वायु अभियानों का प्रदर्शन किया।

भारत-अमेरिका सेना के जवानों ने मिलकर अपने-अपने हथियारों की मारक क्षमता का प्रदर्शन किया। अभ्यास के दौरान यूएस एम-777 अल्ट्रा-लाइट हॉवित्जर तोपों ने भारतीय तोपखाने की यूनिट्स के साथ मिलकर प्रैक्टिस की है। एक्यूरेसी के साथ हॉवित्जर ने इस काल्पनिक युद्ध में सटीक निशाने साधे। हॉवित्जर के हमलों ने पूरे महाजन फील्ड फायरिंग रेंज को हिला दिया। युद्धाभ्यास के दौरान आग को पार करके दुश्मन के ठिकानों तक पहुंचने का भी प्रशिक्षण दिया गया। युद्धाभ्यास के अंतिम चरण में ऐसे दृश्य भी नजर आए, जब जवानों ने आग से होकर दुश्मन के ठिकानों पर निशाना साधा। इसके अलावा घायल होने वाले जवानों को मेडिकल सेवा देने और इन जवानों को हवाई सेवा से अन्यत्र ले जाने के दृश्य भी नजर आए। अभ्यास के अंतिम क्षणों में युद्ध जैसे दृश्य नजर आए। जब दोनों देशों के हथियारों का भरपूर उपयोग हुआ। अमेरिकी हॉवित्जर के हमलों से दूर लगे टारगेट उड़ा दिए गए। वहीं हाई मोबिलिटी रॉकेट से कई सौ किलोमीटर दूर पर लगे टारगेट भी नष्ट किए गए। युद्धाभ्यास के दौरान अमेरिकी सेना में कैप्टन दुर्रानी आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं। अमेरिकी जवान इंग्लिश में बात करते नजर आते हैं, लेकिन दुर्रानी भारतीय जवानों से हिंदी में बात करती है।

- **एयरफोर्स के अपाचे, एलसीएच और थल सेना के हेलिकॉप्टर रुद्र से दुश्मनों पर हमला किया गया, दूसरे चरण में आतंकियों के ठिकानों को खत्म किया**
- **अमेरिका के 600 जवानों में भारतीय मूल की कैप्टन दुर्रानी भी हैं, वह भारतीय जवानों से हिंदी में ही बात करती हैं**

कैप्टन दुर्रानी ने बताया कि उनके दादा भारतीय थल सेना की पंजाब रेजिमेंट में ऑफिसर रहे हैं। वह अपने घर में हमेशा हिंदी बोलते हैं। उनके परिवार के अन्य सदस्य भी हिंदी में ही बात करते हैं। दुर्रानी को मलाल है कि वह युद्धाभ्यास के बीच अपने परिजनों से मिलने लखनऊ नहीं जा सकी। हालांकि उन्होंने नई दिल्ली में अपने मामा से मुलाकात की।

पूरे अभ्यास के दौरान भारत की राजपूत रेजिमेंट और अमेरिका की अलास्का में तैनात एयरबोन विंग के जवान बड़े हथियारों के संचालन की ट्रेनिंग ले चुके हैं। इसके अलावा सैन्य इंजीनियरों ने युद्ध के दौरान फील्ड इंजीनियरिंग पर भी काम किया है। युद्ध में जवान को किस तरह स्वयं को बचाते हुए दुश्मन के ठिकानों को ध्वस्त करना है, इसकी ट्रेनिंग दी गई। युद्धाभ्यास 9 सितंबर को शुरू हुआ था और 21 सितंबर को समाप्त होगा। शुरुआती कुछ दिनों में कमांड पोस्ट सेशन हुए, जिसमें जवानों को शांतिकाल में आतंकी गतिविधियों से निपटने के अभियानों की जानकारी दी गई थी।

युद्धाभ्यास की अहम कड़ी बनीं 8 महिला सैन्य अधिकारी : महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में भारत और अमेरिकी सैनिकों के युद्धाभ्यास के दौरान 8 ऐसी महिला सैन्य अधिकारी हैं, जिन्होंने कॉम्बेट इंजीनियर से लेकर प्लाटून लीडर तक की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी पर खुद को साबित किया है। साउथ वेस्टर्न कमांड ने इन महिला सैन्य अधिकारियों के पराक्रम को नारी शक्ति का गौरवपूर्ण प्रमाण देते हुए 'एक्स' पर वीडियो वायरल किया है। युद्धाभ्यास में भारतीय सेना की 9 राजपूत और अमेरिकी सेना की अलास्का स्थित 11 एयरबोर्न डिवीजन से कुल 1200 सैनिक भाग ले रहे हैं। इन दोनों सेनाओं में ऐसी 8 महिला ऑफिसर भी हैं, जिनके पास महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां हैं। ये महिलाओं केमिकल कोर ऑफिसर, कॉम्बेट इंजीनियर, मेडिकल सपोर्ट, कॉम्बेट फिजिशीयन, फायर सपोर्ट ऑफिसर, कॉम्बेट लॉजिस्टिक, ऑर्डिनेंस ऑफिसर और प्लाटून लीडर के तौर पर बेहतरीन भूमिका निभा रही हैं। सैन्य जानकारी के अनुसार यह युद्ध अभ्यास 2024 नारी शक्ति की शक्ति का एक गौरवपूर्ण प्रमाण है, जिसमें भारत और अमेरिका दोनों की महिला सैनिक अभ्यास के हर चरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

सामरिक संचालन से लेकर नेतृत्व की स्थिति तक, ये सशक्त और कुशल महिलाएं वैश्विक मंच पर अपनी ताकत, लचीलापन और व्यावसायिकता का प्रदर्शन करती हैं। जैसे-जैसे वे सामने से नेतृत्व करते हैं, वे न केवल रक्षा में बाधाओं को तोड़ रहे हैं, बल्कि सशस्त्र बलों में बड़ी भूमिका के लिए मार्ग भी प्रशस्त कर रहे हैं। इन्हें अंतर्राष्ट्रीय सैन्य सहयोग और महिला सशक्तिकरण के भविष्य का प्रतीक के तौर पर देखा जा रहा है।

रामदेवरा मेले से रेलवे को 1.91 करोड़ रुपए की आय हुई

अर्जित राजस्व पिछले वर्ष के मुकाबले 52 फीसदी ज्यादा है

जोधपुर, (कासं)। रेलवे ने इस बार के रामदेवरा मेले से 1 करोड़ 91 लाख रुपए का राजस्व अर्जित करने में सफलता हासिल की है। अर्जित राजस्व पिछले वर्ष के मुकाबले 52 फीसदी ज्यादा है।

उत्तर-पश्चिम रेलवे के जोधपुर डीआरएम पंकज कुमार सिंह ने बताया कि महाप्रबंधक अमिताभ के निर्देशन में इस बार रामदेवरा मेला स्पेशल ट्रेनों का संचालन मेला यातायात और यात्री सुविधा के अनुरूप किया गया। जिसके परिणामस्वरूप रेलवे को ज्यादा यात्रीभार मिला और इससे राजस्व में अपेक्षित वृद्धि हुई। डीआरएम ने बताया कि इस वर्ष रामदेवरा मेला अवधि के दौरान रामदेवरा स्टेशन पर आने वाले कुल 2 लाख 7 हजार यात्रियों से टिकट किराया के बतौर रेलवे को 1 करोड़ 91 लाख रुपए की आय हुई जो पिछले वर्ष के मुकाबले 65 लाख 34 हजार रुपए अर्थात 52 फीसदी अधिक है। उन्होंने बताया कि मेला अवधि के दौरान यात्रियों की आवागमन सुविधा के लिए नियमित ट्रेनों के अलावा छह जोड़ी मेला स्पेशल ट्रेनों का भी संचालन किया गया था जिसमें चार मेला स्पेशल ट्रेनें शामिल है। सीनियर डीसीएम विकास खेड़ा ने बताया कि इस वर्ष संचालित रामदेवरा मेला स्पेशल ट्रेनों की समय सारणी मेला यातायात के अनुकूल होने से रेलवे को अपेक्षाकृत अधिक यात्रीभार उपलब्ध हुआ तथा यात्री सुविधा के मद्देनजर रेलवे स्टेशन पर अतिरिक्त टिकट काउंटर स्थापित किए गए और यात्रियों की सहायता के लिए उचित संख्या में रेलवे कर्मचारियों की ड्यूटी भी लगाई गई। वर्ष 2024 के रामदेवरा मेले में आवागमन के लिए संचालित की गई श्रीगंगानगर-रामदेवरा मेला स्पेशल ट्रेन यात्री सुविधा की दृष्टि से सफल व सुविधाजनक साबित हुई। जिससे रेलवे को अतिरिक्त यात्री यातायात प्राप्त हुआ। उल्लेखनीय है कि इस ट्रेन के कुल 12 ट्रिप में 9 हजार 255 यात्रियों ने रामदेवरा से अपने गंतव्यों तक यात्रा की जिससे जोधपुर मंडल को 11 लाख 4 हजार 450 रुपए की आय हुई।

अजमेर के जेएलएन अस्पताल में डेंगू और मलेरिया के मरीज बढ़े

अस्पताल प्रशासन द्वारा किये गये विशेष इंतजाम भी नाकाफी साबित हो रहे हैं

अजमेर, (कासं)। अजमेर में मौसम के बदलते ही मौसमी बीमारियों का प्रकोप बढ़ने लगा है। संभाग के सबसे बड़े जेएलएन अस्पताल में मरीजों की लंबी कतारें लग रही है। पर्ची काउंटर पर एक ही लाइन में महिला-पुरुष होने पर लोगों ने नाराजगी भी जताई। अस्पताल प्रशासन से मांग की महिलाओं और पुरुषों की अलग-अलग लाइन की व्यवस्था कराई जाए। मरीजों ने अस्पताल प्रशासन पर लापरवाही और अव्यवस्थाओं का आरोप भी लगाया।

मानूसन की बरसात के बाद अजमेर के जवाहरलाल नेहरू अस्पताल में डेंगू और मलेरिया सहित मौसमी बीमारियों के मरीजों की संख्या में तेजी से बढ़ रही है। हालांकि अस्पताल प्रशासन द्वारा विशेष इंतजाम किए हैं, लेकिन अस्पताल में बढ़ती भीड़ को देखते हुए जो नाकाफी साबित हो रहे हैं।

जेएलएन अस्पताल के उप अधीक्षक डॉ. अमित यादव ने बताया कि डेंगू और मलेरिया के मरीजों को भर्ती करने के लिए फेब्रिकेटेड वार्ड में आवश्यक तैयारियां की जा रही हैं। फेब्रिकेटेड वार्ड में कुल 100 बेड हैं, जिनमें से 65 बेड को विशेष रूप से डेंगू और मलेरिया के मरीजों के लिए आरक्षित किया गया है। डॉ. यादव ने बताया कि फेब्रिकेटेड वार्ड में मरीजों को भर्ती किया जा रहा है और हर संभव जांच और उपचार दिया जा रहा है ताकि किसी भी प्रकार की आपातकालीन स्थिति से निपटा जा सके।

अस्पताल में मरीजों की बढ़ती भीड़:- अस्पताल की ओपीडी में भी मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है। ओपीडी में जहां ढाई से तीन हजार मरीज आते थे, वहीं अब बढ़कर 4 से 5 हजार से अधिक हो गई है। इसी प्रकार भर्ती मरीजों की संख्या भी दोगुनी हो गई है। डॉ. यादव ने बताया कि डेंगू और मलेरिया के अलावा अन्य मौसमी बीमारियों जैसे वायरल फीवर, चर्म रोग और सांस से संबंधित समस्याओं के मरीजों की संख्या भी बढ़ी है। अस्पताल में उपलब्ध संसाधनों का पूरा उपयोग करते हुए सभी मरीजों को बेहतर उपचार देने का प्रयास किया जा रहा है।

राशिफल शनिवार 21 सितम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

अश्विन मास, कृष्ण पक्ष, चतुरथी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2081, भरणी नक्षत्र रात्रि 12:36 तक, व्याघात योग दिन 11:36 तक, बव करण प्रात: 7:45 तक, चन्द्रमा रविवार प्रात: 6:04 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-मेष, मंगल-मिथुन, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-तुला, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज ज्वालामुखी योग सायं 6:14 से रात्रि 12:36 तक है। आज चतुरथी व भरणी का श्राद्ध है। चतुरथी व्रत है और आज ईद-ए-मौलाद है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:49 से 9:14 तक, चर 12:20 से 1:50 तक, लाभ-अमृत 1:50 से 4:51 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:19, सूर्यास्त 6:21

मेष
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक प्रतिष्ठा का ध्यान रखें। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

धनु
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। मन में दुविधा बनी रहेगी। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। खान-पान का ध्यान रखें।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। वाणी पर नियंत्रण रखें।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

मकर
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
आर्थिक/वित्तिय मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक योजना बनेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके कार्य बनने लगेंगे। उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

ब्यावर जिले का देवमाली गांव जहां करोड़पति का मकान भी कच्चा है

कोटा, (निसं)। पिछले दिनों भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव प्रतियोगिता का आयोजन किया था। इसमें ब्यावर के देवमाली गावं ने अपना स्थान बनाया। आगामी 27 नवम्बर को इसे दिल्ली में अवार्ड दिया जाएगा।

गुर्जर आरक्षण संघर्ष समिति के सचिव अंकित गुर्जर ने बताया कि राजस्थान का एक ऐसा गांव है जिसमें आज भी एक भी पक्का घर नहीं है और उस गांव का नाम है देवमाली। यह गांव ब्यावर जिले के मसूदा उपखंड से करीब पांच किलोमीटर दूर है। देवमाली गुर्जर बाहुल्य गांव है। इस गांव में गुर्जर समाज के आराध्य देव भगवान देवनारायण का प्राचीन मंदिर है। इस मंदिर में पूरे गांव के लोग बारी-बारी से पूजा करते हैं। इस गांव की विशेषता यह है कि इस गांव में गरीब हो या करोड़पति व्यक्ति उसका घर पूरा कच्चा होता है और उसके घर में दरवाजा नहीं होता है। घी, दूध की कोई कमी नहीं है। यहां मूल रूप से कृषि व पशुपालन पर आधारित परिवार निवास करते हैं। बताया जाता है कि आज तक देवमाली गांव में चोरी नहीं हुई है। इस गांव में केरोसिन तेल पर पूरी तरह से बेन है। यहां पर पेड़-पौधों के प्रति प्रेम भाव है। देवमाली गांव की पहाड़ी पर देवनारायण का मंदिर है। इस मंदिर के चारों और गुर्जर समाज के लोग नंगे पांव परिक्रमा लगाते हैं। देवमाली पहाड़ी पर जो भी बड़ी-बड़ी चट्टानें है वे सब झुकी हुई हैं। इस पहाड़ी से कोई भी पत्थर उठाकर नहीं ले जाता।

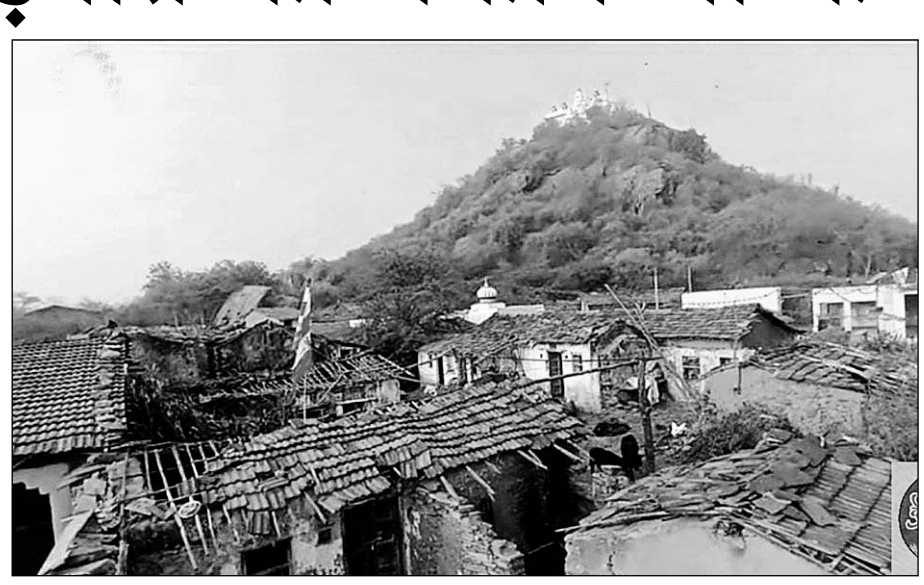

ब्यावर जिले के देवमाली गांव को बेस्ट टूरिस्ट विलेज में शामिल किया गया है।

- **बताया जाता है कि आज तक देवमाली गांव में चोरी नहीं हुई, गांव में केरोसिन तेल पर पूरी तरह से बेन है**
- **ब्यावर जिले के देवमाली गांव के बेस्ट टूरिस्ट विलेज में आने पर गुर्जर समाज के लोगों ने खुशी जताई**

ग्रामीणों का कहना है जब भगवान देवनारायण यहां पर रहने आए थे तब ग्रामीण बहुत खुश थे और गुर्जर समाज के लोगों से कहा कि कोई वरदान मांग लो लेकिन ग्रामीणों ने कोई वरदान नहीं मांगा। इस बात से भगवान देवनारायण खुश हो गए और जाते समय कहकर गए कि यदि शांति से रहना हो तो घर की छत को पक्का मत करना और प्रकृति का ध्यान रखना। तब से लेकर आज तक किसी भी घर में छत पक्की नहीं है। अगर कोई छत पक्की करता है तो उसका कोई न कोई नुकसान होता है। इस गांव की आबादी करीब दो हजार है। साल भर पहले गुर्जर समाज के तत्कालीन एसडीएम भरतलाल गुर्जर द्वारा एक लघु डॉक्यूमेंट्री तैयार करवाई थी और बेस्ट टूरिस्ट विलेज प्रतियोगिता के लिए भेजा गया था। इसमें देवमाली गांव ने अपना स्थान बनाया। बेस्ट टूरिस्ट विलेज में आने पर गुर्जर समाज के लोगों ने खुशी जाहिर की।

राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेश उपाध्यक्ष मन्नालाल गुर्जर, रामलाल गुंजल, डॉ. बी.एल. गोचर, सुरेश गुर्जर केमेस्ट्री क्लासेज, अंकित गुर्जर, पन्नालाल गहलोत, देवलाल गोचर, जमनालाल गुर्जर, रामरतन गोचर, रामलाल कचोटिया, अनीता गुर्जर डायरेक्टर दी रेलवे एम्पलॉइयज को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड जयपुर, लक्ष्मी गोचर, शालिनी गोचर, गौरी गोचर, दिव्या गोचर और गुर्जर समाज के सभी संगठनों ने खुशी जताई है।